विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ **दिनांक -13-07-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी पर आधारित

सुप्रभात बच्चों पाठ 5 प्रायश्चित नामक कहानी के बारे में जितना कल अध्ययन किए थे, आज उसके आगे कहानी के बारे में चर्चा करेंगे। जिसे आप ध्यान पूर्वक पढ़ेगे और दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

शब्दार्थ

घटना -स्थल	वह स्थान जहाँ घटना हुई हो
अंट्ठावन इंच	बहुत बड़ा
गंभीर	गहरा
पुरोहित	पूजा कराने वाले ब्राह्मण पंडित

आवाज जो हुई तो महरी झाड़ू छोड़कर, मिसरानी रसोई छोड़कर और सास पूजा छोड़कर घटनास्थल पर उपस्थित हो गईं। रामू की बहू सर झुकाए हुए अपराधिनी की भाँति बातें सुन रही है।

महरी बोली - "अरे राम! बिल्ली तो मर गई, माँजी, बिल्ली की हत्या बहू से हो गई, यह तो बुरा हुआ।"

मिसरानी बोली - "माँजी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है, हम तो रसोई न बनावेंगी, जब तक बहू के सिर हत्या रहेगी।"

सासजी बोलीं - "हाँ, ठीक तो कहती हो, अब जब तक बहू के सर से हत्या न उतर जाए, तब तक न कोई पानी पी सकता है, न खाना खा सकता है। बहू, यह क्या कर डाला?"

महरी ने कहा - "फिर क्या हो, कहो तो पंडितजी को बुलाय लाई।"

सास की जान-में-जान आई - "अरे हाँ, जल्दी दौड़ के पंडितजी को बुला लो।"

बिल्ली की हत्या की खबर बिजली की तरह पड़ोस में फैल गई - पड़ोस की औरतों का रामू के घर ताँता बँध गया। चारों तरफ से प्रश्नों की बौछार और रामू की बहू सिर झुकाए बैठी।

पंडित परमसुख को जब यह खबर मिली, उस समय वे पूजा कर रहे थे। खबर पाते ही वे उठ पड़े - पंडिताइन से मुस्कुराते हुए बोले - "भोजन न बनाना, लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली, प्रायश्चित होगा, पकवानों पर हाथ लगेगा।"

पंडित परमसुख चौबे छोटे और मोटे से आदमी थे। लंबाई चार फीट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच। चेहरा गोल-मटोल, मूँछ बड़ी-बड़ी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुँचती हुई।

कहा जाता है कि मथुरा में जब पंसेरी खुराकवाले पंडितों को ढूँढ़ा जाता था, तो पंडित परमसुखजी को उस लिस्ट में प्रथम स्थान दिया जाता था।

पंडित परमसुख पहुँचे और कोरम पूरा हुआ। पंचायत बैठी - सासजी, मिसरानी, किसनू की माँ, छन्नू की दादी और पंडित परमसुख। बाकी स्त्रियाँ बहू से सहानुभूति प्रकट कर रही थीं।

किसनू की माँ ने कहा - "पंडितजी, बिल्ली की हत्या करने से कौन नरक मिलता है?" पंडित परमसुख ने पत्रा देखते हुए कहा - "बिल्ली की हत्या अकेले से तो नरक का नाम नहीं बतलाया जा सकता, वह महूरत भी मालूम हो, जब बिल्ली की हत्या हुई, तब नरक का पता लग सकता है।"

"यही कोई सात बजे सुबह" - मिसरानीजी ने कहा।

पंडित परमसुख ने पत्रे के पन्ने उलटे, अक्षरों पर उँगलियाँ चलाईं, माथे पर हाथ लगाया और कुछ सोचा। चेहरे पर धुँधलापन आया, माथे पर बल पड़े, नाक कुछ सिकुड़ी और स्वर गंभीर हो गया - "हरे कृष्ण! हे कृष्ण! बड़ा बुरा हुआ, प्रातःकाल ब्रह्म-मुहूर्त में बिल्ली की हत्या! घोर कुंभीपाक नरक का विधान है! रामू की माँ, यह तो बड़ा बुरा हुआ।"

रामू की माँ की आँखों में आँसू आ गए - "तो फिर पंडितजी, अब क्या होगा, आप ही बतलाएँ!"

पंडित परमसुख मुस्कुराए - "रामू की माँ, चिंता की कौन सी बात है, हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिए हैं? शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है, सो प्रायश्चित से सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

रामू की माँ ने कहा - पंडितजी, इसीलिए तो आपको बुलवाया था, अब आगे बतलाओ कि क्या किया जाए!"

"किया क्या जाए, यही एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाय। जब तक बिल्ली न दे दी जाएगी, तब तक तो घर अपवित्र रहेगा। बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ हो जाए।"

छन्नू की दादी बोली - "हाँ और क्या, पंडितजी ठीक तो कहते हैं, बिल्ली अभी दान दे दी जाय और पाठ फिर हो जाय।"

रामू की माँ ने कहा - "तो पंडितजी, कितने तोले की बिल्ली बनवाई जाए?"

गृहकार्य

(1) पंडित जी का नाम बतावें।

(2) इस पाठ के लेखक का नाम क्या है।

(3) किसकी हत्या हुई थी?

(4) कबरी बिल्ली घर-भर में किससे प्रेम करती थी?

(5) रामू को बहू कबरी बिल्ली से क्यों घृणा करती थी?